

## औषधीय खरपतवार देते हैं मुक्ति कृमि रोगों से

\* 80 प्रकार की वनौषधियों का पारंपरिक उपयोग

\* कृमि को कई रोगों की जड़ माना जाता है

आंतो के कीड़ों को बाहर निकालने के लिये नवगठित राज्य छत्तीसगढ़ के पारंपरिक चिकित्सक 80 प्रकार की वनौषधियों का प्रयोग करते हैं। इन वनौषधियों में अधिकतर खरपतवारों के रूप में उगती हैं। राज्य में वनौषधियों से संबंधित पारंपरिक ज्ञान के दस्तावेजीकरण में जुटे वनौषधि विशेषज्ञ पंकज अवधिया ने यह जानकारी दी।

छत्तीसगढ़ के विभिन्न भागों में किये जा रहे इथनोबॉटनेकल सर्वेक्षणों के आधार पर पंकज अवधिया ने बताया कि खरीफ में औषधीय खरपतवार गुम्मा और रबी में बेमची और बथुआ की सहायता से कृमियों का उपचार किया जाता है। कृमि रोग से सुरक्षा के लिये राज्य के ग्रामीण और वनीय अंचलों के निवासी गुम्मा और बथुआ को साग की तरह प्रयोग कर रहे हैं। यह पीढ़ियों पुराना पारंपरिक ज्ञान है। पारंपरिक चिकित्सक कृमियों को कई रोगों की जड़ मानते हैं। इनमें श्वेत कुष्ठ (ल्यूकोडर्मा) प्रमुख है। इस त्वचा रोग की चिकित्सा में कृमियों को नष्ट करने वाली वनौषधियों का प्रमुखता से उपयोग होता है। राज्य में बथुआ के बीजों से निकाला गया तेल का प्रयोग भी आंतरिक रूप से कृमियों को नष्ट करने में होता है। राज्य के घने वनों में प्राकृतिक रूप से उगने वाली वनौषधि वायविंडग का प्रयोग पारंपरिक चिकित्सकों के बीच लोकप्रिय है। इस वनौषधि की दो जातियाँ पाई जाती हैं और दोनों ही का प्रयोग कृमिनाशक के रूप में होता है। कई पारंपरिक चिकित्सक दोनों जातियों के फलों को मिलाकर प्रयोग करते हैं। इससे अधिक लाभदायी प्रभाव मिलता है। छत्तीसगढ़ के मैदानी भागों के पारंपरिक चिकित्सक बड़, पीपल और गूलर जैसे वृक्षों की जड़ों के नये अंकुरों का प्रयोग कृमिनाशक के रूप में करते हैं। नरहरपुर क्षेत्र के पारंपरिक चिकित्सकों के बीच भिलावा नामक वनौषधि का प्रयोग लोकप्रिय है। उत्तरी छत्तीसगढ़ में अनार के विभिन्न पौधों का प्रयोग घरेलू औषधि के रूप में होता है। गंडई - सालेवारा क्षेत्र के पारंपरिक चिकित्सक मैनफल नामक वनौषधि का प्रयोग चूर्ण के रूप में करते हैं। इस वनौषधि के उपयोग से पहले पौधों को विभिन्न सत्वों से सिंचित किया जाता है जिससे उनके औषधीय तत्व सक्रिय हो जाते हैं। दक्षिण छत्तीसगढ़ में परसा की जड़ों का प्रयोग लोकप्रिय है। अधिक लाभ के लिये पारंपरिक चिकित्सक इसे अन्य वनौषधियों के साथ मिलाकर देते हैं। बेल की पत्तियों का आंतरिक प्रयोग भी प्रचलन में है। 80 प्रकार की वनौषधियों में ज्यादातर कंदीली वनौषधियाँ हैं जिनमें से बहुत सी वनौषधियों की वानस्पतिक पहचान अभी तक नहीं हो पायी है। इस दिशा में प्रयास जारी है। वनौषधियों के अलावा घरेलू नुस्खों से संबंधित पारंपरिक ज्ञान भी राज्य में समृद्ध है। पंकज अवधिया घरेलू नुस्खों के दस्तावेजीकरण की प्रक्रिया में जुटे हुए हैं।

।